सप्तम अध्याय

निष्कर्ष

प्रबन्ध-काव्य के दो मुख्य भेदों (- महाकाव्य एवं खण्डकाव्य) में खण्डकाव्य का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत काव्यशास्त्र में 'खण्डकाव्य' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य विश्वनाथ कृत 'साहित्यदर्पण' में हुआ है। आपने प्रस्तुत काव्य रूप की 'खण्ड-काव्यं भवेद् काव्यस्यैकदेशानुसारि च' तथा 'लघु घटनाप्राधान्यात् खण्डकाव्यमित्युक्तम्' परिभाषाएं दे दी हैं। उनकी परिभाषा के अनुसार काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला तथा एक ही घटना को प्रमुखता देने वाला काव्यरूप ही खण्डकाव्य है। यदि महाकाव्य प्रबन्ध-काव्य का बृहद् रूप है तो खण्डकाव्य उसका लघुरूप है। इस लघुरूप की चर्चा आचार्य विश्वनाथ के पूर्व आचार्य रुद्रट ने की है। आपने काव्य के महद् एवं लघु दो भेद किये।

"सन्ति द्विधा प्रबन्धाः काव्यकथाख्यायिकादयः काव्ये।
उत्पाद्यानुत्पाद्या महल्लघुत्वेन भूयो पि ॥"[1]

आचार्य रुद्रट का लघुकाव्य सम्भवतः खण्डकाव्य के पर्याय रूप में ही प्रयुक्त हुआ है। आचार्य रुद्रट के भी पूर्व आचार्य दण्डी के उर्वर मस्तिष्क में भी ऐसे एक लघु काव्य रूप की परिकल्पना हुई थी। आपने इस लघुरूप को संघात काव्य माना है तथा उदाहरण रूप 'मेघदूत काव्य' का नाम दे दिया है।[2] लक्ष्यग्रंथों के आधार पर ही लक्षणों का निरूपण होता है। लक्ष्य ग्रन्थ के रूप में 'मेघदूत' पहले ही विद्यमान था, तब तो उसके लिए एक अभिधा होनी ही चाहिए। खण्डकाव्य की परिभाषा बांधकर आचार्य विश्वनाथ ने "........ यथा मेघदूतः" बताया है। आचार्य दण्डी ने इसी मेघदूत को संघातकाव्य के उदाहरण रूप में रखा है। तब तो एक ही काव्यरूप के लिए आचार्य दण्डी ने 'संघात

1- काव्यालंकार, आचार्य रुद्रट ८, ५, ६.
2- "यत्र कविरेकमर्थं वृत्तेनैकेन वर्णयति काव्ये।
संघातः स निगदितो वृन्दावन मेघदूतादिः ॥" - काव्यादर्श - आचार्य दंडी, १, १३.

काव्य,' आचार्य रुद्रट के 'लघुकाव्य' तथा आचार्य विश्वनाथ के 'खण्डकाव्य' शब्द प्रयुक्त हुए हैं। निश्चय ही खण्डकाव्य के पर्याय रूप में ही आचार्य दण्डी तथा रुद्रट ने क्रमशः संघात काव्य एवं लघुकाव्य शब्दों का प्रयोग किया है।

हिन्दी के विद्वानों ने संस्कृत के आचार्यों द्वारा निर्धारित परिभाषा की मात्र व्याख्या करने का प्रयत्न किया है।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में खण्डकाव्य के समान काव्यरूप प्राप्त नहीं होते। पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने काव्य का वर्गीकरण -- विषयीप्रधान (subjective) एवं विषयप्रधान (objective) दो रूपों में किया है। विषयीप्रधान के अन्तर्गत आपने गीतिकाव्यों को स्थान दे दिया है विषयप्रधान के अन्तर्गत आख्यानकाव्य का स्थान है। आख्यान काव्य का मुख्य रूप 'एपिक' में प्राप्त होता है तथा उसके विभिन्न भेदों में 'एपिक आफ आर्ट' आ जाता है। एपिक आफ आर्ट के एक लघु रूप के अन्तर्गत 'मॉक एपिक' का पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने जो निर्धारण किया है, वह अपने रूप की दृष्टि से खण्डकाव्य के समकक्ष आता है। इसका रूप लघु होता है, जीवन के एक ही पक्ष का चित्रण इसमें रहता है लेकिन इसकी वर्णनशैली उदात्त न रहकर हास्यव्यंग्यात्मक रहती है तथा उसका विषय भी क्षुद्र रहता है। आधुनिक काल में विरचित 'काकदूत (काका 'हाथरसी') 'कनारी-भट' (गोपालप्रसाद व्यास) जैसे काव्य अपने रूप एवं भाव दोनों दृष्टियों से खण्डकाव्य से भिन्न, उसके पाश्चात्य समकक्ष 'मॉक एपिक' के अन्तर्गत आ जाते हैं।

खण्डकाव्य वह प्रबन्धकाव्य है जिसमें जीवन के एक ही महत्वपूर्ण पक्ष का मार्मिक उद्घाटन रहता है। खण्डकाव्य के सभी तत्वों को समेट लेने वाली एक परिभाषा यह निश्चित की जा सकती है -- किसी व्यक्ति के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या किसी व्यक्ति के चरित्र के एक मार्मिक पक्ष का विश्लेषण करते और प्रबन्धत्व का निर्वाह करते हुए सर्गबद्ध या सर्गरहित तथा एकछन्दात्मक, बहुछन्दात्मक अथवा मुक्तछन्दात्मक शैली में जो काव्य रचा जाता है वह खण्डकाव्य है।

अन्यान्य काव्यरूपों के साथ उसका यत्किंचित साम्य-वैषम्य रहता है। चूंकि कथावस्तु उसका प्रमुख तत्व है, साहित्य के अन्यान्य कथात्मक रूपों का सम्बन्ध उससे रहता है। पद्यात्मक रूपों में महाकाव्य एवं खण्डकाव्य का घनिष्ट सम्बन्ध रहता है। महाकाव्य में जीवन का सर्वांगपूर्ण चित्रण होता है तो खण्डकाव्य मात्र उसके एक पक्ष का संपूर्ण एवं प्रभावशाली चित्र खींचने वाला होता है। अपनी एकांगिता, लघुआकार, पूर्णप्रभावशालिता आदि के कारण महाकाव्य से उसका अस्तित्व अलग रहता है। एकार्थ काव्य, कथाकाव्य जैसे काव्यरूपों तथा एकांकी, कहानी जैसे कथात्मक गद्यरूपों से भी यह अवश्य भिन्न है। कहानी तथा एकांकी में भी जीवन के एक ही पक्ष का मुख्यतया अंकन रहता है। इस अर्थ में खण्डकाव्य से उनकी समानता है, किन्तु दोनों की वर्णनशैली विभिन्न है। कहानी एवं एकांकी के समान इसकी कथावस्तु चरमसीमा पर जाकर समाप्त नहीं होती, इसमें घटना के आरम्भ, विकास एवं निश्चित उद्देश्य में परिणति रहती है।

विभिन्न काव्यरूपों के बीच खण्डकाव्य का विशिष्ट स्थान है। अपनी संक्षिप्तता प्रभावशालिता, हृदयस्पर्शिता आदि गुणों के कारण महाकाव्य से यह काव्यरूप अधिक लोकप्रिय है। तीव्र भावाभिव्यक्ति में गद्य से अधिक पद्य ही सक्षम रहता है तथा इस अर्थ में अन्य कथात्मक गद्य रूपों से अधिक इसकी महत्ता है।

हिन्दी के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य में खण्डकाव्य के रूप प्राप्त होते हैं। भाव एवं रूप की दृष्टि से वे आधुनिक खण्डकाव्यों से बहुत भिन्न कोटि के हैं। वीरगाथा काल में वीर एवं शृंगार रस युक्त खण्डकाव्य विरचित हुए, भक्ति-काल में केवल भक्तिविषयक खण्डकाव्य रचे गये, तथा रीतिकाल में खण्डकाव्य रूप को अधिक प्रश्रय नहीं मिला, किन्तु प्रेम एवं भक्तिविषयक कतिपय खण्डकाव्य इस काल में भी प्रणीत हुए।

आधुनिक काल साहित्य के सर्वांगपूर्ण विकास का युग रहा है। यह वह समय है जब स्वच्छन्दतावाद का प्रभाव हिन्दी साहित्य में पड़ने लगा था। साहित्य क्षेत्र में

रोमान्टिक भावधारा (स्वच्छन्दतावाद) का आगमन सचमुच एक युगांतकारी घटना है । काव्यनियमों की संकुचित शृंखलाओं में जकड़ी हुई पुरानी धारा को प्रस्तुत काव्य धारा के उदय से मानो मुक्ति मिल गयी । चित्र-विचित्र कल्पनाओं के स्वप्निल लोक में विहार करने वाली काव्यप्रतिभा ने जीवन के कटु यथार्थ की ओर एक नया मोड़ लिया । ये नवोदित काव्य मानव-जीवन के अन्तरंग पारखी निकले, तो सहृदयों ने उनका सहर्ष स्वागत किया । इस प्रकार काव्य का नभोमण्डल ही इस युग में अभिनव बन गया, काव्य रूप भी अभिनव साज सज्जा में निखरे । खण्डकाव्य भी नितांत नूतन रूप में अवतरित हुए ।

आधुनिक काल के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों में खण्डकाव्य-प्रणयन को अधिक प्रश्रय मिला । गोरों की गुलामी की कड़ी जंजीरों में जकड़ी हुई भारत भूमि को स्वतंत्र करने का प्रयास सर्वत्र हो रहा था । भारत में सर्वत्र एक नवचेतना फैल चुकी थी । तत्कालीन कविगणों का ध्यान भी स्वदेश के उद्धार की ओर अधिक आकृष्ट हुआ । भारत के स्वर्णिम अतीत के उज्ज्वल व्यक्तित्वों का चित्र अंकित कर भारतवासियों के मन को देशभक्ति, राष्ट्रोद्धार जैसे महत्वपूर्ण विषयों की ओर आकृष्ट करने का प्रयास इस काल में हुआ । व्यक्ति के गरिमामय चरित्र के एक मार्मिक पक्ष का प्रभावशाली चित्रण करने में सक्षम काव्य रूप रहा खण्डकाव्य । इस प्रकार इस काल में खण्डकाव्यों का पर्याप्त प्रणयन हुआ ।

आधुनिक काल के खण्डकाव्य अपने उदय से लेकर निरंतर विकास कर रहे हैं । उनकी विकास-परम्परा के अध्ययन की सुविधा के लिए इसे तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है — छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्य, छायावादी युग के खण्डकाव्य तथा छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्य । आधुनिक काल के प्रारम्भ में ही आदिकाल से चली आती खण्डकाव्यधारा ने पहली बार क्रान्ति का अनुभव किया । इस काल में उसकी भाषा में परिवर्तन आया । अब तक ब्रजभाषा ही काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी । अब

खड़ीबोली हिन्दी सदा के लिए काव्य-भाषा बन गयी । भाषा-परिवर्तन के साथ-साथ उसका विषय-क्षेत्र भी विस्तृत हो गया । प्रख्यात एवं काल्पनिक कथानक खण्डकाव्य के लिए विषय बने । इस प्रकार रूप एवं भाव दोनों क्षेत्र में इस काल के खण्डकाव्यों में परिवर्तन हुआ । इस काल के प्रारंभ में खण्डकाव्यों का एक लम्बा तांता ही लग गया । रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त जैसे कवियों ने अपने खण्डकाव्य रूपी अनूठे रत्नों से हिन्दी खण्डकाव्य-भण्डार को भरने का सफल प्रयास किया ।

खण्डकाव्य क्षेत्र में दूसरी क्रांति तब आयी जब उसमें छायावादी काव्यप्रवृत्तियों का प्रभाव पड़ा । छायावादी प्रवृत्तियों के सम्मिलन से खण्डकाव्यों का भावपक्ष अधिक भावप्रवण हो गया तथा उसकी कथातंत्रियां क्षीण हो गयीं । फिर भी प्रबन्धत्व का पूर्ण निर्वाह करने वाले खण्डकाव्यों के नये प्रयोग इस काल में हुए । इस युग में काव्य क्षेत्र में 'मुक्तछन्द' का पदार्पण हुआ तो अधिकांश खण्डकाव्यों ने उसे भी मुक्त मन अपना लिया। इस काल की यही विशेष बात परिलक्षित होती है कि इस काल में भी परम्परा के पालन करने वाले खण्डकाव्य बनते रहे । मुक्तछन्द के खण्डकाव्य इस काल की अनूठी उपलब्धि है, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने किया ।

छायावादोत्तर युग में मनोविश्लेषणात्मक खण्डकाव्यों की रचना के साथ-साथ खण्डकाव्य क्षेत्र में तीसरी बार क्रांति आयी । इस काल के खण्डकाव्यों में कथावस्तु से अधिक पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्रविश्लेषणों को स्थान प्राप्त हुआ । मनोविश्लेषणात्मक, प्रतीकात्मक, आदि खण्डकाव्य इस काल के अपने हैं । इस प्रकार आधुनिक काल के तीनों चरणों -- छायावाद पूर्व युग अथवा प्रारंभिक युग, छायावादी युग तथा छायावादोत्तर युग -- में खण्डकाव्य क्षेत्र में क्रांति अपनायी । इन क्रांतियों का इतिहास ही आधुनिक काल की खण्डकाव्यधारा की रामकहानी है ।

प्रख्यात एवं काल्पनिक इतिवृत्तों पर इस काल में खण्डकाव्य रचे गये । प्रख्यात में पौराणिक तथा ऐतिहासिक इतिवृत्त समाविष्ट होते हैं । महाभारत, रामायण,

महाभागवत, कठोपनिषद्, जैसे पुराण ही आधुनिक अधिकांश खण्डकाव्यों के प्रेरणास्रोत
रहे । महाभारतीय आख्यान एवं उपाख्यानों के आधार पर इस काल में जयद्रथ-वध, कीचक-
वध, अभिमन्यु-पराक्रम, कर्ण, गुरुदक्षिणा, द्रोण, कच-देवयानी सती-सावित्री,
शकुन्तला जैसे खण्डकाव्य रचे गये तो महाभारतीय कथा की पृष्ठभूमि में विरचित खण्डकाव्य
हैं कुरुक्षेत्र, सुवर्णा आदि । इन खण्डकाव्यों में पौराणिक कथा केवल काव्य की पृष्ठ-
भूमि के रूप में रहती है, काव्य की घटना एवं विचार कवि के अपने रहते हैं । ऐसे काव्यों
में कवि की मौलिक उद्भावना के सुस्पष्ट रूप निखर आते हैं । रामायणी कथा पर पंचवटी,
चित्रकूट, कैकेयी, लक्ष्मण-शक्ति, पाषाणी जैसे खण्डकाव्यों का प्रणयन हुआ तो रामा-
यणी कथा की पृष्ठभूमि में 'संशय की एक रात', 'प्रवासन', 'अग्निपथ' जैसे काव्य विरचित
हुए । भागवत के आधार पर उद्धवशतक, प्रभास, कुब्जा, परीक्षित जैसे खण्डकाव्य, कठोप-
निषद् के आधार पर आत्मजयी, तथा दुर्गासप्तशती के आधार पर चण्डिका, रणचण्डी जैसे
खण्डकाव्य प्रणीत हुए । इन हिन्दू पुराणों के अतिरिक्त ईसाई धर्मपुराण बाइबिल तथा
मुस्लिम धर्म ग्रन्थ भी हिन्दी खण्डकाव्य प्रणयन के प्रेरणास्रोत रहे । बाइबिल की कथा को
आधार बनाकर 'बन्धुमुक्त' नामक खण्डकाव्य तथा मुस्लिम धर्म पुराण के आधार पर 'काबा
और कर्बला' काव्य बने हैं ।

इस काल में ऐतिहासिक इतिवृत्तों के आधार पर भी अनेक खण्डकाव्य विरचित
हुए । भारतीय प्राचीन ऐतिहासिक युग तथा आधुनिक ऐतिहासिक युग दोनों आधुनिक
खण्डकाव्यों की विषयवस्तु बने । प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक युग मौर्यविजय, महाराणा
का महत्व, गोरा-वध, तप्तगृह, अशोक जैसे खण्डकाव्यों के आधार बने तो महारानी
लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे मीरकासिम पद्माकर, मुक्तियज्ञ आदि खण्डकाव्यों के लिए आधुनिक
भारतीय ऐतिहासिक इतिवृत्त ही आधार बना है ।

काल्पनिक इतिवृत्त भी अनेक खण्डकाव्यों के लिए ग्राह्य हुए । राष्ट्रीयता-मूलक,
प्रेममूलक, सामाजिक, विचारात्मक, हास्यात्मक तत्वों पर खण्डकाव्य प्रणीत हुए ।

राष्ट्रीयतामूलक खण्डकाव्यों में मिलन, पथिक, स्वप्न आदि, प्रेममूलक के अन्तर्गत प्रेमपथिक, कामिनी, आँसू, सुहाग ग्रंथि जैसे काव्य, सामाजिक में अनाथ, किसान मुक्तदमी, बरगद की बेटी आदि, विचारात्मक के अन्तर्गत चाँदनी रात और अजगर और हास्यात्मक खण्डकाव्यों में काकदूत, अनारी-नर आदि का स्थान है।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक इतिवृत्त ही इस काल के अधिकांश खण्डकाव्यों के आधार हैं। पौराणिक इतिवृत्तों को उसी रूप में चित्रित न करके, नयी उद्भावनाओं के साथ, नये परिवेशानुकूल प्रस्तुत करने का प्रयत्न इन अधिकांश खंडकाव्यों में हुआ है। छायावादपूर्व युग के खण्डकाव्यों में पौराणिक कथावस्तुओं की अलौकिकता का अंश वर्तमान है किन्तु छायावादी एवं छायावादोत्तर युग में आकर कथावस्तु का यह अलौकिक अंश सदा के लिए दूर हो गया तथा इन कथावस्तुओं की लौकिक धरातल पर नवीन अवतारणा हुई। पौराणिक घटनाओं के मनोवैज्ञानिक चित्रण ने काव्य-कथावस्तु को वास्तविक परिधान प्रदान कर दिया है। ऐतिहासिक घटनाओं के अवतरण की भी यही बात है। अतीत की घटनाओं को नवीन परिवेश में नवीन रूप-रंग देकर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास आधुनिक खण्डकाव्यकारों ने किया है। पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं का मनोवैज्ञानिक एवं नवीन परिवेशानुकूल प्रस्तुतीकरण आधुनिक खण्डकाव्यों में ही परिलक्षित होती है तथा यह आधुनिक खण्डकाव्यों को, कवियों की देन है।

आधुनिक खण्डकाव्यों में पौराणिक, ऐतिहासिक एवं काल्पनिक कथावस्तुओं की सफल संयोजना हुई है। मानव जीवन के एक ही पक्ष को उद्घाटित करने वाली घटनाएं ही इन खण्डकाव्यों में प्रस्तुत हुई हैं। इन घटनाओं के आरम्भ, विकास एवं निश्चित उद्देश्य में परिसमाप्ति से काव्यवस्तु का संगठन हुआ है। छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में घटनाओं का प्रमुख स्थान रहा, धीरे-धीरे स्थूल कथावस्तुओं के स्थान पर सूक्ष्म कथातंत्रियों का प्रवेश हुआ। सूक्ष्म-कथातंत्रियों को प्रबन्धयुक्त शैली में पिरोकर छायावादी युग में कथा-

वस्तु का संयोजन किया गया । छायावादोत्तर युग में उक्त घटनाओं का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण हुआ । ये सब हिन्दी खण्डकाव्यों के कथावस्तु-संयोजन के क्रमिक विकास के द्योतक हैं । प्रासंगिक कथाएँ बहुत ही थोड़े खण्डकाव्यों में उपस्थित हैं । जयद्रथ-वध जैसे खण्डकाव्यों में प्रासंगिक कथाओं का मात्र संकेत हुआ है । वस्तुतः आधुनिक काल के खण्डकाव्य में एक ही प्रमुख घटना, भाव या विचार को केन्द्रीभूत करके ही वस्तु चयन किया गया है ।

पात्र एवं उनके चारित्रिक विश्लेषण का भी इस काल के खण्डकाव्यों में विशेष महत्व है । आधुनिक खण्डकाव्यों में प्रख्यात एवं काल्पनिक दोनों प्रकार के पात्र चित्रित हुए । उच्च एवं निम्न श्रेणी के व्यक्ति काव्य के नायक-नायिका के पद पर आसीन हुए । महाभारत, रामायण, भागवत जैसे पुराणों के पात्र ही पौराणिक खण्डकाव्यों में मुख्यतया चित्रित हैं । उन पौराणिक पात्रों के चरित्र की नितांत नूतन रूप में प्रस्तुति आधुनिक खण्डकाव्यों में द्रष्टव्य है । आधुनिक प्रारंभिक खंडकाव्यों के पात्र चाहे अपनी अलौकिकता से अधिक विमुक्त नहीं हो सके, किन्तु छायावादी एवं छायावादोत्तर युग में आकर पौराणिक पात्रों का नितांत लौकिक एवं यथार्थ की पृष्ठभूमि पर चरित्र-चित्रण हुआ । पात्रों के मानसिक संघर्षों एवं अन्तर्द्वन्द्वों के चित्रण ने इन पौराणिक पात्रों को यथार्थ मानवीय धरातल पर खड़ा कर दिया है । पौराणिक पात्रों के चरित्र का परम्परानुकूल एवं परम्परा-विरुद्ध चित्रण इस काल में खूब हुआ । श्रीराम, श्रीकृष्ण, भरत, अर्जुन, अभिमन्यु, द्रोण, भीष्म, युधिष्ठिर जैसे पौराणिक पात्र व्यक्तित्वपूर्ण एवं मानसिक संघर्षों से युक्त बताये गये । परम्परा के विरुद्ध इस काल में एक खण्डकाव्य में रावण के चरित्र को ऊपर उठाया गया है तथा श्रीराम के चरित्र के दुर्बल पक्षों का उद्घाटन किया गया है । अनेक उपेक्षित पात्रों का उद्धार इस काल में संभव हुआ । महाभारत के उपेक्षित पात्र 'कर्ण' इस काल के कर्ण, दानवीर कर्ण, रश्मिरथी जैसे अनेक खण्डकाव्यों के नायक बने, तथा उसके चरित्र का मनोविश्लेषणात्मक वर्णन भी प्रस्तुत हुआ । एकलव्य गुरुदक्षिणा काव्य के द्वारा ऊपर उठाया गया ।

नारी पात्रों को इस काल में विशेष प्रश्रय मिला । राक्षसी नारियों का चरित्र भी खूब सुधर कर प्रस्तुत हुआ । शूर्पणखा, हिडिम्बा जैसी राक्षसी पात्र, अपने व्यक्तित्व के कारण मानवीय धरातल पर उतर आये, तथा उनके चरित्र के सत्पक्षों का खूब उद्घाटन हुआ । रामायण की उपेक्षिता एवं कलंकिता नारी पात्र कैकेयी एवं अहल्या तथा भागवत की नारी पात्र कूबरी चरित्र का भी इस काल में विशेष उत्कर्ष हुआ । दैवी दुर्गा इस काल के खण्डकाव्यों में नारी का प्रतीक बनकर अवतरित हुई । सीता, द्रौपदी जैसे स्त्री पात्रों के परम्परानुकूल रूप को बनाये रखते हुए भी इस काल में उनका मनोविश्लेषणात्मक एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण हुआ । यह मनोवैज्ञानिक मनोविश्लेषणात्मक एवं प्रतीकात्मक चरित्रचित्रण-प्रणाली आधुनिक खण्डकाव्यों के चरित्र-विकास का मीलस्तंभ है । ऐतिहासिक एवं काल्पनिक पात्रों का भी मनोवैज्ञानिक एवं सर्वांग चरित्र-चित्रण प्रस्तुत हुआ है । सचमुच ये सभी पात्र मानवीय संस्कृति के प्रतीक बनकर मानवता का सन्देश फैलाने वाले बन गये हैं । आदर्श से अधिक पात्रों के यथार्थ चरित्रचित्रण पर ही आधुनिक खण्डकाव्यकार अधिक सजग रहे हैं ।

खण्डकाव्यों में रस-संयोजन का भी महत्वपूर्ण स्थान है । आधुनिक प्रारंभिक खण्डकाव्यों में रस-निरूपण पर कवियों का बड़ा ध्यान दृष्टिगोचर होता है । मुख्य रूप से आधुनिक खण्डकाव्यों में रसों का दो रूपों में चित्रण हुआ है -- समस्त काव्य में एक ही रस का समग्र रूप में चित्रण तथा अनेक रसों का असमग्र रूप में चित्रण । मुख्यतया शृंगार, वीर एवं करुण रस ही आधुनिक खण्डकाव्यों के अंगी रस रहे हैं । अंग रूप में अन्य रसों का चित्रण भी कतिपय खण्डकाव्यों में हुआ है । छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में रस की बहुत बड़ी मान्यता रही, शनैः शनैः खण्डकाव्यों में रस की महत्ता क्षीण होती आयी छायावादी एवं छायावादोत्तर युग में कवियों का रस सम्बन्धी दृष्टिकोण थोड़ा-बहुत बदल चुका था, तथा मनोवैज्ञानिक चरित्र-विश्लेषण को काव्य में मुख्य स्थान प्राप्त हुआ । मनोविश्लेषण के आगमन ने सचमुच खण्डकाव्यों के रस-संयोजन को कमजोर कर दिया है । किंतु परम्परावादी एवं ईश्वरवादी कवियों ने अपने खण्डकाव्यों में अवश्य रस को प्रश्रय दिया है ।

भावपक्ष की भाँति कलापक्ष का भी सफल संयोजन आधुनिक खण्डकाव्यों में हुआ है । खड़ी बोली हिन्दी आधुनिक खण्डकाव्यों की काव्यभाषा रही । ब्रजभाषा में भी कतिपय खण्डकाव्य इस काल में रचे गये, जो उक्त भाषा की सुकोमल शैली के सुन्दर निदर्शन हैं । खड़ी बोली भाषा खण्डकाव्यों की भावाभिव्यक्ति के लिए सर्वथा सक्षम रही है । तत्समप्रधान समासयुक्त भाषाशैली का प्रयोग भी इस काल के कतिपय खण्डकाव्यों में द्रष्टव्य है । भाषाशैली को सुकोमल एवं सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक अलंकारों का प्रयोग इस काल के खण्डकाव्यों में हुआ है । शाब्दिक एवं आर्थिक अलंकार की मंजु छटा अधिकांश खण्डकाव्यों में विद्यमान है । छायावादी एवं छायावादोत्तर काल के खण्डकाव्यों में यत्र-तत्र मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय आदि अलंकारों तथा प्रतीक विधान, बिम्ब-विधान, आदि तत्वों का भी समावेश दृष्टिगोचर होता है ।

आधुनिक काल में छन्दबद्ध एवं छन्दमुक्त दोनों ही प्रकार के खण्डकाव्य लिखे गये । आधुनिक प्रारंभिक युग के खण्डकाव्यकार छन्दबद्ध काव्य के निर्माण के पक्षपाती रहे । आपने छन्दात्मक अथवा बहुछन्दात्मक प्रणाली पर अपने काव्यों का प्रणयन किया । छायावादी युग में मुक्तछन्द के प्रवेश के साथ हिन्दी खण्डकाव्यों के छन्द-विधान में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आया । छन्दबद्धता, जो प्रबन्धकाव्यों का आवश्यक गुण ठहराया गया था, वह निर्मूल सिद्ध हुआ । मुक्तछन्दों में प्रबन्धत्व का पालन करते हुए, प्रभावशाली शैली में खण्डकाव्य निर्मित हुए, तो यह आधुनिक खण्डकाव्य-धारा के इतिहास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बन गयी । ताल-लय-युक्त इस मुक्तछन्द में पात्रों के मानसिक संघर्षों की सफल अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक अवकाश रहता है तथा साथ ही साथ out of reading भी ।

आधुनिक युग के खण्डकाव्यों में शिल्पसम्बन्धी तत्वों में भी परिवर्तन हुआ है । अतएव इस युग में काव्य सम्बन्धी प्राचीन नियमों की प्रायः उपेक्षा हुई है । नवीनता के पक्षपाती नवीन कलाकारों ने पुराने लक्षणों में अपने दृष्टिकोण एवं नये परिवेश के अनुसार आवश्यक परिवर्तन कर डाले हैं । मंगलाचरण के प्रति आधुनिक काल के प्रारंभ से ही

उपेक्षा भाव दिखायी पड़ता है । आधुनिक काल के बहुत ही कम खण्डकाव्यों में इसकी योजना हुई है । क्रांतिकारी कवियों ने अपने कतिपय खण्डकाव्यों का प्रारंभ मानव एवं उपेक्षित मानव की वन्दना से किया है ।

आधुनिक काल में सर्ग बद्ध एवं सर्गमुक्त दोनों ढंग पर खण्डकाव्य लिखे गये । सर्ग संख्या पर इस काल के कवियों की कोई निश्चित गणना नहीं रही । तीन से लेकर चौदह तक सर्गों का प्रयोग आधुनिक खण्डकाव्यों में हुआ है । वस्तुतः सर्ग विधान या सर्ग संख्या खण्डकाव्य निर्धारण का आधार नहीं होता । आधुनिक खण्डकाव्यकारों ने अपनी रुचि तथा विषय विस्तार के अनुकूल उसका विभाजन सर्गों में किया है या नहीं किया है । कतिपय खंडकाव्यों में वर्णन संकेत शीर्षकों में दिये हैं तथा कतिपय में सर्ग-विधान एवं वर्णन संकेत दोनों हैं । सर्ग के लिए इस काल के खण्डकाव्यों में स्पर्श, भाग, खण्ड, उच्छ्वास, आहुति जैसे नाम भी प्रयुक्त हैं । यह भी सम्पूर्ण आधुनिक काल के खण्डकाव्यों के रूप विकास, एवं नवीन प्रयोगों के परिचायक हैं ।

आधुनिक काल के खण्डकाव्यों का नामकरण मुख्यतया प्रमुख पात्र, प्रमुख घटना, प्रमुख घटनास्थल, प्रमुख भाव, विचार अथवा प्रतीक के आधार पर हुआ है । इस काल के खण्डकाव्यों के शीर्षक सर्वथा सार्थक, काव्य के कथ्यवस्तु के अनुकूल एवं सफल रहे हैं ।

भाव एवं रूप दोनों पक्षों में वैविध्यपूर्ण अनेक खण्डकाव्य आधुनिक काल में प्रणीत हुए । रूप एवं भाव पक्ष में इतनी वैविध्यों को समाविष्ट करने वाला दूसरा काव्यरूप शायद ही होगा । प्रख्यात एवं काल्पनिक कथावस्तुओं पर, उच्च श्रेणी के अथवा निम्न श्रेणी के व्यक्ति को केन्द्र बनाकर, सर्ग बद्ध या सर्गमुक्त, छन्दबद्ध या छन्दमुक्त शैली में रसों को प्रमुख स्थान देकर अथवा मनोवैज्ञानिक चरित्र विश्लेषणों को मुख्य स्थान देकर विभिन्न प्रकार के काव्य विरचित हुए । खण्डकाव्य में इस प्रकार की विविधताओं को समेट

शैली की अद्भुत क्षमता है। रूप तथा भाव दोनों पक्षों में विविधता एवं अभिनवता को लेकर अवतरित आधुनिक खण्डकाव्य सचमुच हिन्दी काव्य-भण्डार की अनूठी निधि है। आधुनिक काल के तीनों चरणों में होकर मुख्यतया एक सौ से अधिक उत्कृष्ट खण्डकाव्य लिखे गये। वस्तुतः यह हिन्दी खण्डकाव्य के इतिहास का स्वर्णकाल है।

आधुनिक काल के प्रणीत खण्डकाव्य धारा के वर्गीकरण का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक तथा प्रवृत्तिगत कालविभाजन के अतिरिक्त कथावस्तु, रस छन्द, वर्ण, भाषा, वर्णनशैली आदि काव्यतत्वों के आधार पर भी आधुनिक खण्डकाव्यधारा का वर्गीकरण संभव है।

द्विवेदीकालीन नवीन प्रयोगों की ओर आधुनिक खण्डकाव्यप्रणेता सर्वदा सजग रहे हैं। इन खण्डकाव्यों के मूल में जो महान् एवं लोकोपयोगी उद्देश्य निहित है, वे खण्डकाव्यों के महत्त्व को बढ़ा देते हैं। जटिल मनोवैज्ञानिक विचारविश्लेषणों को भी मनोरंजक एवं रसपूर्ण शैली में अपने अन्दर समेट कर छायावादोत्तर युग में अवतरित खण्ड-काव्य विशेष महत्त्व के हैं।

नयी कविता के इस वर्तमान युग में प्रबन्ध काव्य कम ही लिखे जा रहे हैं। भावाभिव्यक्ति के सफल एवं सशक्त माध्यम के रूप में अब गद्य की स्वीकृति हो गयी है। पुराने युग में पद्य ही भावाभिव्यक्ति का माध्यम रहा, इस कारण प्रबन्धकाव्य खूब प्रणीत हो रहे थे। जीवन के मार्मिक पक्षों के भावपूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति के लिए कहानी, उपन्यास आदि रूप ही अधिक समीचीन दिखायी पड़े, अतः साहित्यकारों का ध्यान उस ओर अधिक हो गया है। इस दशा में प्रबन्धकाव्यों की सीमा कम हो गयी है। किन्तु अपनी कथात्मकता, भावप्रवणता, काव्यसौष्ठव, उत्कृष्ट विचार एवं उद्देश्य तथा सर्वोपरि लघु आकार के कारण खण्डकाव्य अभी भी लोकप्रिय हैं। छन्दबद्ध कविता के विनाश के युग में प्रबन्ध काव्यों के प्रणयन में यद्यपि धक्का लगा है, तथापि खंडकाव्य प्रणयन की ओर कवियों की रुचि अभी सक्रिय है। वस्तुतः हिन्दी के इस विलक्षण काव्य रूप के लिए आगे भी मार्ग प्रशस्त है।

परिशिष्ट

विचित्र उलझन तथा सुलझाव

हिन्दी के प्रबन्धकाव्यों के बीच से खण्डकाव्यों को निर्धारित करते वक्त एक विचित्र उलझन सामने आती है। इस विचित्र उलझन के मूल में अनेक कारण दृष्टिगत होते हैं। परम्परागत काव्य-लक्षणों के प्रति आधुनिक कवियों का विद्रोह ही इसके मूल में प्रमुखतः कार्य करता है। अपने अन्तरंग तथा बहिरंग में नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से अवतरित होने वाले ये काव्य अपने रूप-परीक्षक के सम्मुख चकाचौंध उपस्थित कर देते हैं। लेकिन खण्डकाव्य की अपनी विशेष विलक्षणता भी रहती है जो लम्बी परम्परा के बीच भी अपने पृथक अस्तित्व को अक्षुण्ण रखने में सक्षम होती है। इन मूलभूत अक्षुण्ण तत्वों के आधार पर ही आधुनिक प्रबन्धों के बीच से खण्डकाव्यों का निर्धारण संभव होता है। खण्डकाव्यों के पूर्वनिर्धारित लक्षणों व तत्वों[1] का पूर्णतः पालन जिन काव्यों में दृष्टिगत होता है, वे खण्डकाव्यों के अन्तर्गत समाहित हुए हैं। किन्तु कतिपय ऐसे भी काव्य हैं जो पूर्णरूप से खण्डकाव्य के अन्तर्गत नहीं आते, तो भी अपने रूप या भावयोजना के कारण खण्डकाव्य कहलाने योग्य बन जाते हैं, जिन्हें अनदेखा करना अनुचित ठहराता है।

प्रबन्ध के दो मुख्य भेद -- महाकाव्य तथा खण्डकाव्य में आकार जनित भेद तो रहता ही है, अपना लघु कलेवर महाकाव्य से इसे पृथक् करने में सहायक है। किन्तु केवल आकार काव्यरूप निर्धारण का आधार नहीं रह सकता। कतिपय काव्य ग्रंथों के मुखपृष्ठ या भूमिका में स्वयं कवि या प्रकाशक अपने काव्य के महाकाव्य या खण्डकाव्य होने के तथ्य का उद्घाटन करते हैं। इस प्रकार के रूप निर्धारण में कवियों का पूर्वाग्रह भी प्रायः दृष्टिगत होता है।

१- आधुनिक खण्डकाव्यों को भी दृष्टिपथ में रखकर जिन नवीन लक्षणों का व तत्वों का निर्धारण प्रथम अध्याय में हुआ है।

प्रबन्धत्व

प्रबन्धकाव्यान्तर्गत ही खण्डकाव्य का स्थान है । प्रबन्धतत्व की उपस्थिति, अनुपस्थिति के आधार पर ही प्रबन्ध-मुक्तक भेदों का निर्धारण हुआ है । प्रबन्ध तत्व के बारे में चिंतन करते समय यह भी देखना अनिवार्य है कि यह प्रबन्धतत्व किसका हो, किस प्रकार का हो । परस्पर बन्ध ही प्रबन्ध के मूल का तत्व है । प्रबन्धकाव्यों में कथावस्तु का बन्ध सापेक्ष्य वर्णन रहता है । कहीं उसकी शृंखला टूटती नहीं । प्रबन्ध काव्यों में कथा का ही बन्धन हो यह अनिवार्य नहीं । भाव या विचारों का बन्धन भी काव्य को प्रबन्धत्व प्रदान करता है। ऐसे काव्यों में इतिवृत्त के स्थान पर भाव या विचारों का क्रमबद्ध विकास लक्षित होता है । इनमें कथा का विकास न होकर उसके स्थान पर भाव या विचार का विकास होता है । ऐसे काव्यों में भी इतिवृत्त का नितांत अभाव तो नहीं रहता, अत्यंत सूक्ष्म रूप में यह अवश्य रह जाता है । यों भाव एवं विचारों के बन्धन से युक्त काव्य भी प्रबन्ध काव्य की कोटि में आ जाते हैं । जिन काव्यों में जीवन के एक ही पक्ष के मार्मिक उद्घाटन के लिए क्रमबद्ध भावों या विचारों की अन्विति होती है, वे काव्य खण्डकाव्य के अन्तर्गत समाविष्ट होते हैं । छायावादी तथा छायावादोत्तर कतिपय खण्डकाव्य इस तथ्य के अनुपम निदर्शन हैं ।

कथानक

कथानक तो खण्डकाव्य का प्रख्यात या काल्पनिक दोनों हो सकता है । जीवन
के एक प्रसंग को लेकर चलने वाले तथा संपूर्ण अनुभूति प्रदान करने वाले काव्य खण्डकाव्य
हैं । प्राय: उसमें एक ही मुख्य घटना रहती है, कभी कभी उस प्रसंग या अनुभूति को पुष्ट
करने योग्य अन्य प्रसंगों की भी अवतारणा होती है । खण्डकाव्य में कवि की दृष्टि
वस्तुपरक या बाह्यार्थ निरूपिणी न रहकर भावपरक या आत्माभिव्यक्तिप्रधान अधिक
रहती है । खण्डकाव्य की कथावस्तु के लिए कोई निश्चित सीमा नहीं है । उसमें जीवन
का एकांगी चित्रण निहित रहता है । कथावस्तु की एकांगिता से मतलब उसकी संक्षिप्तता
है, अपूर्णता नहीं । खण्डकाव्य की कथावस्तु तथा उसका प्रभाव अपने में पूर्ण रहता है ।

कथावस्तु की पूर्णता के लिए जितनी ही वस्तु अपेक्षित है, उसे ही खण्डकाव्यकार काम लेते हैं। आधुनिक काल के प्रारंभिक खण्डकाव्यों में स्थूल कथावस्तुएं उपलब्ध होती हैं तो छायावादी तथा छायावादोत्तर खण्डकाव्यों में स्थूल कथावस्तु का त्याग दृष्टिगत होता है। उनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के अन्तरान्तर जो सूक्ष्म कथार्लाड़ियां निहित हैं, उनका सफलतापूर्वक आयोजन होता है। ऐसे काव्य भी जीवन के एक प्रभावशाली अंश का पूरा खाका खींचने वाला तथा अपने में पूर्ण प्रभाव डालने वाला होता है तो ऐसे काव्य भी खण्डकाव्य के भीतर समाविष्ट हो जाते हैं।

खण्डकाव्य के लिए कथावस्तु अपेक्षित है कि नहीं ?

कथावस्तु खण्डकाव्य का एक अपेक्षित अंग है। छायावाद पूर्व खण्डकाव्यों में स्थूल कथावस्तु का अंकन स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य है। छायावादी युग में बहिर्गीत के स्थान पर अन्तर्गीत का प्राधान्य हो गया तो सूक्ष्म भावों पर काव्य-प्रणयन होने लगे। इन भावों के बीच केवल सूक्ष्म कथा की लड़ियां ही रह जाती हैं। ऐसे काव्य, जिनमें केवल सूक्ष्म कथावस्तु ही अन्तर्लीन रहती है, उनमें भी यदि भावों या विचारों में परस्पर बन्ध है तो वह अवश्य प्रबन्धकाव्य ही है। यदि उनमें भावों की सापेक्ष धारा से जुड़ी सूक्ष्म कथावस्तु जीवन के एक पक्ष का चित्रण करने वाली तथा पूर्ण प्रभाव से युक्त है तो क्यों कर वह खण्डकाव्य की श्रेणी में स्थान नहीं पा सकता ? इसका समाधान यही है कि स्थूल कथावस्तुओं के स्थान पर सूक्ष्म कथावस्तु भी खण्डकाव्य के लिए पर्याप्त है। ऐसे काव्यों में कथावस्तु की प्रमुखता का स्थान मनोवैज्ञानिक विचार विश्लेषण या अन्य भाव ले लेते हैं। परस्पर अन्वत्व का विशेष गुण उसे खण्डकाव्य का का[illegible] दे देने में समर्थ होता है।

कहीं-कहीं काव्य में कथा का प्रबन्धत्व मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के बीच बिखर जाता है। कभी-कभी काव्यों में एक ही कथावस्तु का कारण-कार्यपरक प्रवाहशील वर्णन नहीं होता, कथा खण्ड-खण्ड में विच्छिन्न रह जाती है। यह विशेषता छायावादी

तथा छायावादोत्तर खण्डकाव्यों में ही अधिक लक्षित होती है। सफल प्रबन्ध काव्यकार मनोयोग के साथ इन अलग-अलग खण्डों को भी गूंथ कर काव्य रूप को पूर्णता दे देने में सफल होते हैं। यदि किसी काव्य में एक ही कथा की बिखरी कथातंत्रियों का ही सही, सामर्थ्यपूर्ण सफल आयोजन हुआ है तो ऐसा काव्य खण्डकाव्य की श्रेणी में आ जाता है।

खण्डकाव्यों में सर्ग, छन्द, काव्यशैली आदि के विधान के निरीक्षण करते समय भी ऐसा ही विचित्र उलझन दिखायी पड़ता है।

प्राय: प्रबन्धकाव्यों में कथाविस्तार सर्गों में होता है। लेकिन सर्गबद्धता प्रबन्धकाव्यों का अनिवार्य गुण नहीं ठहरता। प्राचीन आचार्यों ने आठ या उससे अधिक सर्ग वाले प्रबन्धकाव्यों को महाकाव्य तथा आठ से कम सर्गवाले प्रबन्ध काव्यों को खण्डकाव्य माना है। यह तो केवल आकार की विशालता एवं लघुता की ही सूचना देता है। जीवन का सर्वांगपूर्ण चित्र उपस्थित करने वाला काव्य-महाकाव्य अवश्य बृहदाकार का रहेगा। जीवन के एक पक्ष के चित्रण से युक्त काव्य का आकार अपेक्षाकृत लघु ही रहेगा। केवल आकार काव्यरूपों का निर्धारक मानदण्ड नहीं बन सकता। खण्डकाव्यों के सर्गों के आठ से कम निर्धारित करने में आचार्यों का मंतव्य उसके लघु आकार पर ही रहा होगा। खण्डकाव्य के लिए कथावस्तु के भिन्न-भिन्न सर्गों में अनिवार्य रूप से विभाजित होने की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि खण्डकाव्य में जीवन के बहुमुखी वैविध्य को दिखाने की गुंजाइश नहीं रहती। वस्तुत: सर्गबद्धता खण्डकाव्य का अनिवार्य गुण नहीं है। इस प्रसंग में सर्ग संख्या का निर्धारण और भी अप्रासंगिक रह जाता है। खण्डकाव्य में कथा-वस्तु का सर्गबद्ध चित्रण भी हो सकता है।

सर्गविधान-सम्बन्धी किसी निश्चित विधि के अभावके कारण सर्ग एवं आकार सम्बन्धी बहुत अधिक वैविध्य खण्डकाव्य क्षेत्र में दृश्यमान है। ऐसा वैविध्य शायद ही अन्य काव्यरूपों में दृष्टिगत होगा। यही वैविध्य हमारे सम्मुख उलझन खड़ा करता है। हिन्दी खण्डकाव्य जगत में एक ओर सर्गबद्ध काव्य का सृजन हुआ तो दूसरी ओर सर्गरहित

काव्य का भी । दोनों ही प्रकार के काव्यों में प्रबन्धत्व का शुद्ध गुण विद्यमान हुआ तो सर्गबद्धता का गुण अनिवार्य नहीं ठहर सका । विषय-विस्तार की आवश्यकता के अनुसार कवि अपनी विषयवस्तु को सर्गों में बद्ध या सर्गरहित वर्णन कर सकता है । इस के लिए किसी विधि की अनिवार्यता नहीं चाहिए । विषयवस्तु के अनुकूल कवि आकार का विस्तार तथा सर्गों का नियोजन कर सकता है ।

सर्गसंख्या निर्धारण की समस्या तब उपस्थित होती है जबकि आठ से अधिक सर्गवाले खण्डकाव्य भी प्राप्त होते हैं । हिन्दी में असंख्य सर्गबद्ध खण्डकाव्य विरचित हुए । कतिपय खण्डकाव्य आठ से कम सर्गवाले हैं तो कतिपय आठ से अधिक सर्गवाले । सर्गों के आठ से अधिक होने के एकमात्र कारण से वे काव्य महाकाव्य नहीं कहला सकते । सर्गों की संख्या की अधिकता के कारण मात्र से कोई काव्य खण्डकाव्य कहलाने अयोग्य नहीं रह जाता । यदि उसका वस्तु विन्यास एवं शिल्पविधान खण्डकाव्य का है तो वह काव्य खण्डकाव्य ही ठहरेगा । तात्पर्य यह कि सर्गसंख्या खण्डकाव्य के रूप निर्धारण का मानदण्ड नहीं । काव्यकार अपने विषय के अनुकूल कथावस्तु का विभाजन कर सकता है ।

यह बात तो स्मरणीय है कि खण्डकाव्य का आकार जितना लघु रहे, प्रभावोत्पादकता का गुण बढ़कर ही रहेगा । यही नहीं इतिवृत्तात्मकता से अधिक भावपरकता ही तो उसकी आत्मा है । 'खण्डकाव्य में वर्णन विस्तार नहीं हो सकता । उसकी वस्तु भावात्मक अधिक होती है, अतः गीतिकाव्य की भावप्रवणता और तीव्र अनुभूति उसमें जितनी अधिक होती है उसका प्रभाव उतना ही अधिक होता है । इस प्रकार उसकी कथा का विकास बहुत कुछ भाव विकास पर आधारित होता है । खण्डकाव्य का यही लक्षण उसे चरितकाव्य या साधारण प्रबन्धकाव्य से भिन्न करता है ।[१]

१- हिन्दी साहित्य कोश : सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा : भाग १ : पृ० २७४.

सामान्यतया खण्डकाव्यों में छंदों की विविधता नहीं होती, प्राय: समस्त काव्य एक ही छंद में रचा जाता है। किन्तु इसका भी कोई निश्चित नियम नहीं। प्राय: सर्गरहित काव्य एक ही छंद में निर्मित होता है। सर्गबद्ध काव्यों में भी कतिपय एक ही छंद के मिलते हैं तो कतिपय खण्डकाव्य में प्रत्येक सर्ग में छन्द-परिवर्तन मिलता है। बहुछंदों के खण्डकाव्य भी खूब विनिर्मित हुए। छायावादी एवं छायावादोत्तर कवियों ने छंद क्षेत्र में क्रांति उपस्थित कर मुक्तछंद में भी सफल खण्डकाव्यों की रचना की। इस प्रकार छन्द-बद्धता खण्डकाव्य का अनिवार्य लक्षण नहीं रह गया। मुक्त छन्द में इतने सुन्दर, प्रभावोत्पादक एवं सुगठित खण्डकाव्य विरचित हुए कि छन्दबद्धता का विशेष गुण फीका पड़ने लगा। खण्डकाव्य में जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्र नहीं रहता। इसलिए छन्द-परिवर्तन की कोई अनिवार्यता महसूस नहीं होती। प्रभावोत्पादन में एकता बनाये रखने के लिए एक छंद ही वांछनीय रह जाता है। कतिपय खण्डकाव्यों में बीच में या यत्र-तत्र गीतों का समावेश होता है। इससे प्रबन्धत्व कभी भी बिखरता नहीं। कहीं कहीं गीतों का समावेश काव्य को अधिक रुचिपूर्ण बना देता है। इस कारण गीतों की संगति खण्डकाव्यों की एक विशेषता ही रह जाती है -- जो कि अभिनव खण्डकाव्य में अधिक मात्रा में प्राप्त है।

काव्यशैली के कारण प्रस्तुत काव्यक्षेत्र में जितनी समस्याएं सिर उठाती हैं, उतनी और किसी कारण से नहीं। साधारणतया खण्डकाव्य कथात्मक (वर्णनात्मक) शैली का रहता है। यही तो उसका सामान्य रूप है। इस शैली को छोड़ अन्य शैली में जो खण्डकाव्य मिलते हैं वे ही प्रश्नचिह्न प्रस्तुत करते हैं। जैसे कि कभी-कभी खण्डकाव्य में कथा का विकास संवाद या नाट्यशैली में होता है। इस एक कारण से वह काव्य पद्य नाटक या गीतिनाट्य नहीं माना जा सकता। हिन्दी के कतिपय खण्डकाव्य इस प्रकार के रूप-सम्बन्धी उलझन में पड़े हुए हैं। किसी काव्य में नाट्यशैली में कथा का विस्तार होता है तो यदि उसमें खण्डकाव्य के आवश्यक अन्य गुण विद्यमान हैं तो वे नाट्य-शैली के खण्डकाव्य ही रह जाते हैं न कि गीतिनाट्य या पद्यनाट्य। क्योंकि केवल काव्य में

नाट्यशैली का होना गीतिनाट्य के लिए पर्याप्त नहीं। 'यदि वह प्रबन्ध न तो महाकाव्य बन पाया है और न नाटक तो उसे नाटकीय शैली का प्रबन्धकाव्य कहा जायगा और यदि वह अभिनेय है और उसमें नाटक के गुण अधिक हैं तो उसे पद्य नाटक या गीतिनाट्य कहेंगे।'[1] महाराणा का महत्त्व, नहुष, सिद्धराज, उर्वशी आदि काव्य इस दृष्टि से नाट्यशैली के प्रबन्धकाव्य (खण्डकाव्य) ही ठहरते हैं।

ऐसे भी कुछ खण्डकाव्य मिलते हैं जिनमें कथाविस्तार गीतिकाव्य की शैली में हुआ है। आंसू, ग्रंथि, प्रेमपथिक आदि ऐसे ही काव्य हैं। अपने तीव्र मानसिक भावों की व्यंजना के लिए कविगण ने गीतिशैली का प्रयोग ऐसे काव्यों में किया है। यदि ऐसे काव्यों में जीवन के एक पक्ष का उद्घाटन मार्मिक रूप में मिलता है तथा प्रबन्धत्व का गुण भी विद्यमान है तो वह गीतिशैली का खण्डकाव्य ही रह जाता है। संस्कृत आचार्यों ने मेघदूत को खण्डकाव्य के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें भावों का प्रस्फुटन गीतात्मक कलेवर में हुआ है। वस्तुत: गीतिगुण खण्डकाव्य की धारणा में चार चाँद लगा देने वाला है।

'उद्धवशतक' जैसे काव्यों के काव्यरूप भी उलझन पैदा करने वाले हैं। इसमें मुक्तक काव्यशैली गृहीत है तथा कथा का क्रमिक विकास भी हुआ है। कथा का प्रबन्धत्व इसे मुक्तक काव्य की कोटि से ऊपर उठाकर प्रबन्ध काव्य की कोटि में लाता है। ऐसे काव्य वस्तुत: मुक्तक काव्य नहीं ठहरते। क्योंकि मुक्तक का लक्षण यह नहीं है कि उसका प्रत्येक पद अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र हो, लेकिन कथा शृंखला से भी मुक्त हो। कथा-विन्यास तो अवश्य ही प्रबन्धकाव्य का लक्षण है। इस कारण ऐसे काव्य जिसमें कथा का प्रबन्धात्मक वर्णन हुआ है, उसे प्रबन्धकाव्य ही माना जाना चाहिए। 'अर्थ की दृष्टि से प्रत्येक पद्य पूर्ण स्वतंत्र होते हुए भी यदि किसी काव्य में व किसी कथासूत्र में भी गुंफित हो अर्थात्

१- हिन्दी साहित्य कोश : भाग १ : पृ० ४२२.

काव्य का कथानक सुव्यवस्थित हो तो ऐसी रचना प्रबन्धकाव्य के अन्तर्गत गृहीत होनी चाहिए ।[१] यदि ऐसा प्रबन्धकाव्य, खण्डकाव्य की श्रेणी में आने वाला है तो उसे खण्ड-काव्य के विभिन्न शैलीभेदों के अन्तर्गत रखा जाना चाहिए ।

प्रबन्ध काव्यों के बीच से खण्डकाव्यों के चुनाव में उपर्युक्त उलझन ही मुख्यतया कठिनाई पैदा करने वाली है । काव्य तो भावों की निराली दुनिया है । आजकल के कवि लकीर के फकीर भी नहीं मिलते, तो नये परिवेशानुकूल खण्डकाव्य क्षेत्र में भी नितांत नूतन क्रांतियां उपस्थित हुईं । क्रांति या परिवर्तन तो निश्चय ही विकास का द्योतक है, अतः खण्डकाव्य क्षेत्र की क्रांतियों को भी उसका विकास ही मानना समीचीन है ।

१- संभावना, अक्तूबर १९७३, पृ० ३३ (शिवप्रसाद गोयल का एक निबन्ध : प्रबन्ध काव्य का एक भेद : प्रसंग काव्य)

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी

१- अग्निपथ -- अनूपशर्मा, १९५८

२- अजित -- मैथिलीशरण गुप्त, काशी, १९५७.

३- अजेय पौरुष -- शंकर सुल्तानपुरी, १९६६

४- अनाथ -- सियारामशरण गुप्त, काशी.

५- अनारी-नर -- गोपाल प्रसाद व्यास, दिल्ली, १९६६.

६- अनामिका -- राजेन्द्र शर्मा, १९५७.

७- अपरा -- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', इलाहाबाद, १९४६.

८- अभिमन्यु का आत्मबलिदान -- श्यामाप्रसाद वर्मा, १९१८.

९- अभिमन्यु-पराक्रम -- देवीप्रसाद बरनवाल, १९४०.

१०- अमृतपुत्र -- सियारामशरण गुप्त, काशी, १९५९.

११- अशोक -- रामदयाल पाण्डेय, पटना, १९५१.

१२- आँसू -- जयशंकर प्रसाद, इलाहाबाद.

१३- आत्मजयी -- कुँवर नारायण, १९६५.

१४- आत्मोत्सर्ग -- सियारामशरण गुप्त, काशी, १९३२.

१५- अभिमन्यु-वध -- रघुनन्दन लाल मिश्र, १९२५.

१६- उत्तरजय -- नरेन्द्रशर्मा, १९७०.

१७- उद्धवशतक -- जगन्नाथदास 'रत्नाकर', इलाहाबाद, १९२९.

१८- उर्वशी -- रामधारीसिंह 'दिनकर', पटना, १९६१.

१९- ऊजड़ग्राम -- श्रीधर पाठक, १८८६.

२०- एकान्तवासी योगी -- श्रीधर पाठक, १८८६.

२१- कच-देवयानी -- रामचन्द्र, १९५८.

२२- कनुप्रिया — धर्मवीर भारती, १९५९.
२३- कर्ण — केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', इलाहाबाद, १९५०.
२४- करुणालय — जयशंकरप्रसाद
२५- काकदूत — काका 'हाथरसी' १९६४.
२६- काबा और कर्बला — मैथिलीशरण गुप्त, झाँसी, १९४२.
२७- कामिनी — नरेन्द्रशर्मा, इलाहाबाद, १९४३
२८- कारा — दीपचन्द्र सुमन.
२९- किसान — मैथिलीशरण गुप्त, झाँसी, १९१७.
३०- कीचक-वध — शिवदास गुप्त, १९२१.
३१- कुटिया का राजपुरुष — गिरजाप्रसादसिंह 'बटुक', १९६६.
३२- कुरुक्षेत्र — रामधारीसिंह 'दिनकर', पटना, १९४६.
३३- कुमरी — रामनारायण अग्रवाल, १९६५.
३४- कैकेयी — क्षेममणि शर्मा, १९५२.
३५- कौणार्क — रामेश्वरदयाल दुबे, लखनऊ
३६- कौशिक कथा — उदयशंकर भट्ट,
३७- गीतिगुंज — सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लखनऊ, १९५४.
३८- गुरुदक्षिणा — विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
३९- गृहलक्ष्मी — गिरिजाशंकर शुक्ल 'गिरीश', दिल्ली.
४०- गोरा-वध — श्यामनारायण पाण्डेय
४१- ग्रंथि — सुमित्रानंदन पंत, इलाहाबाद.
४२- घैरी का पीहर — आनन्द मिश्र, दिल्ली.
४३- चक्रव्यूह — विनोदचन्द्रपाण्डेय 'विनोद'
४४- चाँदनी रात और अजगर — उपेन्द्रनाथ 'अश्क', इलाहाबाद, १९५७.
४५- चित्तौड़ की चिता — रामकुमार वर्मा, १९२९.
४६- चित्रकूट — त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री, आगरा.
४७- जयद्रथ-वध — मैथिलीशरण गुप्त, झाँसी.

४८- जौहर -- श्यामनारायण पाण्डेय.

४९- झाँसी की रानी -- श्यामनारायण प्रसाद.

५०- तप्तगृह -- केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', १९५४.

५१- तांत्या टोपे -- लक्ष्मीनारायण 'कुशवाह'

५२- तुलसीदास -- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, इलाहाबाद, १९३८.

५३- दशानन -- कैलाश त्रिपाठी 'किशोर', १९५८.

५४- दानवीर कर्ण -- गुरुबख्श ऐमनाबाद, १९५९.

५५- द्रोण -- रामगोपाल रुद्र, १९६८.

५६- द्रौपदी -- नरेन्द्रशर्मा, दिल्ली, १९६०.

५७- द्रौपदी-चीर-हरण -- तारकेश्वर त्रिपाठी, १९२४.

५८- नकुल -- सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, १९४६.

५९- नहुष -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, १९४०.

६०- पंचवटी -- मैथिलीशरण गुप्त, ,,

६१- पथिक -- रामनरेश त्रिपाठी -- भार्गव पुस्तक भंडार

६२- परशुराम की प्रतीक्षा -- रामधारी सिंह दिनकर

६३- परिमल -- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' -- गंगापुस्तक माला, लखनऊ, १९३०.

६४- परीक्षित -- शांति भारद्वाज 'राकेश', १९६६.

६५- पांचाली -- रांगेय राघव, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा १९५५.

६६- पाषाणी -- शरणबिहारी गोस्वामी, १९६५.

६७- प्रतिभा -- सरनामसिंह शर्मा 'अरुण', १९६८.

६८- प्रयाण -- गिरिजाशंकर शुक्ल 'गिरीश', रा० बेनीमाधव, इलाहाबाद.

६९- प्रवीर -- केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', १९७०.

७०- प्रह्लाद -- विजयसिंह 'सिंह', १९६१.

७१- प्राणार्पण -- बालकृष्णशर्मा 'नवीन', सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, १९६२.

७२- प्रेमपथिक (ब्रजभाषा) -- जयशंकरप्रसाद, १९०५.

७३- प्रेमपथिक (खड़ी बोली) -- जयशंकरप्रसाद, १९१४.

७४- प्रेमविजय -- सेठ गोविन्ददास, १९५८.

७५- बंगाल का काल -- हरिवंशराय 'बच्चन', राजपाल एंड संस, दिल्ली, १९४६.

७६- बकसंहार -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, १९२७.

७७- बरगद की बेटी -- उपेन्द्रनाथ 'अश्क', नीलाभ प्रकाशन.

७८- भस्मांकुर -- नागार्जुन, १९७०.

७९- भूमिजा -- रघुवीरशरण मित्र, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, १९६१.

८०- महाराणा का महत्व -- जयशंकरप्रसाद, १९१८.

८१- महारानी लक्ष्मीबाई -- श्यामनारायण प्रसाद, १९६२.

८२- मानसी -- उदयशंकर भट्ट.

८३- मिलन -- रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मन्दिर, सुल्तानपुर, पच्चीसवाँ सं० , १९७०.

८४- मुक्तियज्ञ -- सुमित्रानंदन पंत, १९६५.

८५- मेघदूत -- वासुदेवशरण अग्रवाल.

८६- मौर्यविजय -- सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, १९१४.

८७- युद्ध -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, १९५२.

८८- रंग में भंग -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी.

८९- रक्त चंदन -- नरेन्द्र शर्मा.

९०- रणचण्डी -- विश्वनाथ पाठक, १९६१.

९१- रत्ना की बात -- प्रेमनारायण टंडन, १९६८.

९२- रत्नावली -- हरिप्रसाद 'हरि', १९६३.

९३- रश्मिरथी -- रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल प्र०, पटना.

९४- रूपछाया -- रांगेयराघव, किताब महल, इलाहाबाद, १९५२.

९५- लहर -- जयशंकरप्रसाद.

९६- लक्ष्मण-शक्ति -- राधाराम श्रीवास्तव, १९५०.

९७- वन-वैभव -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, १९२७.

९८- विकट-भट -- मैथिलीशरण गुप्त.

९९- विद्युतोपाख्यान -- भगवतीशरण चतुर्वेदी, १९५६.
१००- विषपान -- सोहनलाल द्विवेदी, इंडियन प्रेस, १९५६.
१०१- वीरबाला पद्मधर -- सम्पत कुमारिया, प्रयाग, वि० सं०, १९९८.
१०२- वीर हमीर -- रामकुमार वर्मा, १९२०.
१०३- शकुन्तला -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झांसी, १९५४.
१०४- शल्यवध -- उग्रनारायण मिश्र, १९५५.
१०५- शक्ति -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झांसी, १९२७.
१०६- शिवाजी -- उमाकांत मालवीय, १९७०.
१०७- शांतपथिक -- श्रीधर पाठक, १८८६.
१०८- संशय की एक रात --नरेश मेहता, १९६२.
१०९- सती सावित्री --गोपाल शास्त्री, १९५७.
११०- सिंहद्वार -- जीवन शुक्ल, १९५६.
१११- सिद्धराज --मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झांसी, १९३६.
११२- सुनन्दा -- सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, झांसी, १९६८.
११३- सुवर्णा -- नरेन्द्र शर्मा, १९७०.
११४- सुहाग -- माहेश्वरीसिंह 'महेश', १९३२.
११५- सेनापति कर्ण -- लक्ष्मीनारायण मिश्र,
११६- सैरन्ध्री -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झांसी, १९२८.
११७- सौमित्र -- रामेश्वरदयाल दुबे, १९६५.
११८- स्वतंत्रता की बलिवेदी -- जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, साहित्य प्रकाशन मंदिर, ग्वालियर,
नवीन सं०, १९७१.

११९- स्वप्न -- रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, १९२९.
१२०- हरिश्चन्द्र -- जगन्नाथदास 'रत्नाकर', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, १८९४.
१२१- हिडिम्बा -- मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झांसी, १९५०.

प्राचीन-ग्रंथ

१२२- तुलसी ग्रंथावली — पं० रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी.

१२३- बीसलदेव रासो — पं० माताप्रसाद गुप्त.

१२४- बेलिकृष्ण रुक्मिणी री — हिन्दुस्तानी एकेडेमी.

१२५- संदेश रासक — पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी.

१२६- सुदामा चरित — टीका — कृष्णदेव, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली.

आलोचना ग्रंथ

१२७- अरस्तू का काव्यशास्त्र — डा० नगेन्द्र और महेन्द्र चतुर्वेदी, इलाहाबाद, सं० २०१४

१२८- आज का हिन्दी साहित्य — प्रकाशचन्द्र गुप्त.

१२९- आधुनिक कवि — विश्वम्भर मानव, इलाहाबाद.

१३०- आधुनिक काव्यधारा और दर्शन — डा० राममूर्ति त्रिपाठी, साहित्य सदन, इलाहाबाद, १९७१.

१३१- आधुनिक काव्यधारा — डा० केसरीनारायण शुक्ल, नंदकिशोर एंड संस, वाराणसी.

१३२- आधुनिक साहित्य — आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, भारती भण्डार, इलाहाबाद, वि० २०२२.

१३३- आधुनिक साहित्य और साहित्यकार — डा० गणपतिचन्द्र गुप्त.

१३४- आधुनिक साहित्य परिचय — ओमप्रकाश शर्मा.

१३५- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ — नामवरसिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

१३६- आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका — शंभुनाथ पाण्डेय.

१३७- आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ — डा० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

१३८- आधुनिक हिन्दी कविता में विषय और शैली — रांगेयराघव, राजपाल एंड संस, दिल्ली.

१३९- आधुनिक हिन्दी कविता: सिद्धान्त और समीक्षा — विश्वंभरनाथ उपाध्याय.

१४०- आधुनिक हिन्दी काव्य -- डा० राजेन्द्रकुमार मिश्र, कानपुर, १९६६

१४१- आधुनिक हिन्दी काव्य की भूमिका -- शंभुनाथ पाण्डेय, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

१४२- आधुनिक हिन्दी काव्य : कृति और चिंता -- डा० सुरेश माथुर, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ.

१४३- आधुनिक हिन्दी काव्य में परम्परा तथा प्रयोग -- डा० गोपालदत्त सारस्वत, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद.

१४४- आधुनिक हिन्दी काव्य में रूप विधाएं -- डा० निर्मला जैन, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

१४५- आधुनिक साहित्य -- नामवरसिंह, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर प्रा० लि०, दिल्ली.

१४६- आधुनिक हिन्दी साहित्य -- लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी साहित्य परिषद, प्रयाग.

१४७- आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास -- डा० श्रीकृष्णलाल, हिन्दी सा० परिषद, प्रयाग. १९५२

१४८- उदयशंकर भट्ट : व्यक्ति और साहित्यकार -- सं० शांति बिहारी भटनागर.

१४९- कवि अनूपशर्मा कृतियां और कला -- सं० प्रेमनारायण टंडन, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ.

१५०- कवि और काव्य -- बलदेव उपाध्याय और शांतिप्रिय द्विवेदी, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद.

१५१- कवि प्रसाद -- रामरतन भटनागर, किताब महल, इलाहाबाद.

१५२- कवि प्रसाद : आंसू तथा अन्य कृतियां -- विनयमोहन शर्मा.

१५३- कविवर डा० रामकुमार वर्मा और उनका काव्य -- प्रो० दशरथराज.

१५४- काव्य का देवता निराला -- विश्वंभर मानव, लोक भारती, इलाहाबाद.

१५५- काव्य के रूप -- गुलाबराय, आत्माराम एंड सन्स.

१५६- काव्यचिंतन -- डा० नगेन्द्र.

१५७- काव्यदर्पण -- विद्यावाचस्पति रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला, पटना.

१५८- काव्यप्रदीप -- रामबहोरी शुक्ल, हिंदी भवन, इलाहाबाद.

१५९- काव्य में अप्रस्तुत योजना -- रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला, पटना.

१६०- काव्यरूपों के मूल स्रोत और उनका विकास -- डा० शकुन्तला दुबे, हिन्दी प्रचार
पुस्तकालय, वाराणसी.
१६१- काव्यशास्त्र -- भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
१६२- काव्यालोक -- रामदहिन मिश्र, ग्रंथमाला, पटना.
१६३- खड़ी बोली के गौरव ग्रंथ -- विश्वंभर मानव, किताब महल, वाराणसी, १९५६.
१६४- गुप्तजी की काव्यकला -- सत्येन्द्र, साहित्य रत्न भंडार, आगरा.
१६५- गुप्तजी की कृतियाँ -- श्यामनंदन प्रसाद, किताब महल, इलाहाबाद.
१६६- छायावाद -- नामवरसिंह, सरस्वती प्रेस.
१६७- छायावाद -- डा० उदयभानु सिंह.
१६८- छायावाद : प्रकृति और प्रयोग -- डा० कमलाप्रसाद पाण्डेय.
१६९- छायावाद के गौरव चिह्न -- प्रो० क्षेम, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, १९५६.
१७०- छायावाद के प्रतिनिधि कवि -- डा० शिवपालसिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी, १९७२.
१७१- छायावादी काव्य का कला विधान -- डा० कबीरसिंह 'रत्न', नेशनल पब्लिशिंग
हाउस, दिल्ली, १९७०.
१७२- जयशंकरप्रसाद -- नन्ददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार.
१७३- जयशंकरप्रसाद : चिंतन व कला -- इन्द्रनाथ मदान, हिन्दी भवन.
१७४- जयशंकरप्रसाद : वस्तु और कला -- डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, दिल्ली, १९६२.
१७५- डा० रामकुमार वर्मा का काव्य -- प्रेमनाथ त्रिपाठी.
१७६- दिनकर -- सं० डा० सावित्री सिन्हा.
१७७- दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र -- तारकानाथ बाली, विनोद पुस्तक मंदिर.
१७८- दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र -- कैलाशसिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली.
१७९- दिनकर के काव्य -- मालधर त्रिपाठी, आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी.
१८०- नया साहित्य : नये प्रश्न -- नंददुलारे वाजपेयी, विद्यामंदिर, वाराणसी.
१८१- नया हिन्दी काव्य -- डा० शिवकुमार मिश्र, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर.

१८२- निराला — रामविलास शर्मा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

१८३- पंत का काव्यदर्शन — प्रतापसिंह चौहान, प्रद्युम्न प्रकाशन, कानपुर.

१८४- पथिक : एक अध्ययन — रामलोचन चौधरी.

१८५- पथिक का काव्यसौन्दर्य — राधेश, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा.

१८६- पश्चिमी आलोचना शास्त्र — डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, १९६५.

१८७- पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा — सं० डा० नगेन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय.

१८८- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत — शांतिस्वरूप गुप्त.

१८९- पाश्चात्य काव्य समीक्षा — [illegible] शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली.

१९०- पाश्चात्य काव्य सिद्धांत — राजेन्द्रसिंह भाटी, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली.

१९१- प्रसाद का काव्य — डा० प्रेमशंकर, भारती भंडार.

१९२- प्रसाद काव्य विवेचन — हरदेव बाहरी, अरविन्द प्रकाशन, इलाहाबाद, १९५८.

१९३- प्रसादजी की कला — डा० गुलाबराय, साहित्य रत्न भण्डार.

१९४- प्रसाद प्रतिभा — चन्द्रनाथ मदान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, १९७१.

१९५- प्लेटो का काव्यसिद्धांत — डा० निर्मला जैन.

१९६- बालकृष्ण शर्मा नवीन : व्यक्ति एवं काव्य — लक्ष्मीनारायण दुबे, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद.

१९७- बीसवीं शती हिन्दी काव्य : प्रतिनिधि कवि — डा० देवर्षि सनाढ्य, सरस्वती सदन, दिल्ली.

१९८- भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा — नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

१९९- भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका — ,, ,,

२००- भारतीय काव्यशास्त्र : नये संदर्भ — डा० राममूर्ति त्रिपाठी, हिमालय पाकेट बुक्स प्रा० लि०, दिल्ली, १९७३.

२०१- भारतीय काव्य समीक्षा — डा० श्रीनिवास शर्मा, अशोक प्रकाशन.

२०२- भारतीय संस्कृति — बलदेवप्रसाद मिश्र, नंदकिशोर एंड संस.

२०३- मलयालम के खण्डकाव्य — एस० तंकमणि अम्मा, कोचिन, १९७४.

२०४- महाभारत का आधुनिक हिन्दी प्रबन्धकाव्यों पर प्रभाव -- डा० विनय.
२०५- मैथिलीशरण गुप्त -- डा० रामरतन भटनागर, किताब महल.
२०६- मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य -- कमलाकांत पाठक, रणजीत पब्लिशिंग दिल्ली.
२०७- युग और साहित्य -- शांतिप्रिय द्विवेदी.
२०८- युग कवि निराला -- पं० गिरिराजशरण अग्रवाल, साहित्य निकेतन, कानपुर, १९७०.
२०९- रत्नाकर और उनका काव्य -- उषा जायसवाल, हि० प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी.
२१०- रत्नाकर और उनका उद्धवशतक -- भैरवसिंह भाटी, अशोक प्रकाशन.
२११- रामनरेश त्रिपाठी : व्यक्तित्व और कृतित्व -- डा० रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल.
२१२- रामनरेश त्रिपाठी और पथिक -- फूलचन्द्र सारंग जैन, किताब घर, ग्वालियर.
२१३- वाङ्मय विमर्श -- आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी.
२१४- शैली -- करुणापति त्रिपाठी, साहित्य सेवक कार्यालय, वाराणसी.
२१५- श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व स्वच्छंदतावादी काव्य -- डा० रामचन्द्र मिश्र.
२१६- संस्कृत आलोचना -- पं० बलदेव उपाध्याय, हिन्दी समिति, लखनऊ.
२१७- संस्कृति के चार अध्याय -- डा० रामधारीसिंह दिनकर, उदयाचल प्रकाशन, पटना.
२१८- साहित्य और शैली -- डा० गणपतिचन्द्र गुप्त.
२१९- साहित्य विवेचन -- क्षेमचन्द्र सुमन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली.
२२०- साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश -- राजेन्द्र द्विवेदी.
२२१- साहित्यावलोकन -- डा० विनयमोहन शर्मा, साहित्य भवन, इलाहाबाद.
२२२- सिद्धांत और अध्ययन -- डा० गुलाबराय, आत्माराम एंड संस, दिल्ली.
२२३- सियारामशरण गुप्त : व्यक्तित्व और कृतियाँ -- डा० शिवप्रसाद मिश्र. 963
२२४- सूर पूर्व ब्रजभाषा और साहित्य -- डा० शिवप्रसाद सिंह.
२२५- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी प्रबन्धकाव्य -- डा० बनवारीलाल शर्मा.
२२६- हमारे कवि -- राजेन्द्रसिंह गौड़, साहित्य भवन, इलाहाबाद.
२२७- हिन्दी कविता में युगांतर -- डा० सुधीन्द्र, आत्माराम एंड संस.

२२८- हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियां -- डा० रघुवंश, राजकमल प्रा० लि०, दिल्ली.

२२९- हिन्दी साहित्य की सामाजिक भूमिका -- डा० शंभुनाथ सिंह.

२३०- हिन्दी काव्य : पिछला दशक -- गोविन्द शर्मा रजनीश.

२३१- हिन्दी काव्य : विश्लेषण और मूल्यांकन -- सं० डा० केसरीनारायण शुक्ल.

२३२- हिन्दी काव्य विमर्श -- डा० गुलाबराय, आत्माराम एंड संस.

२३३- हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास -- डा० भगीरथ मिश्र.

२३४- हिन्दी का सामयिक साहित्य -- आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र.

२३५- हिन्दी के नए प्रबन्धकाव्य -- डा० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'.

२३६- हिन्दी के प्रतिनिधि कवि -- डा० सत्यदेव चौधरी.

२३७- हिन्दी के मध्यकालीन खण्डकाव्य -- डा० सियाराम तिवारी, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली.

२३८- हिन्दी के श्रेष्ठ काव्यों का मूल्यांकन -- सं० मधुलाटी.

२३९- हिन्दी भाषा का इतिहास -- डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकादमी, इलाहाबाद.

२४०- हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी -- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयाग, १९६६.

२४१- हिन्दी साहित्य का इतिहास -- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी.

२४२- हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास -- डा० गणपतिचन्द्र गुप्त, अलीगढ़, १९६५

२४३- हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास -- डा० गुलाबराय, सरस्वती पुस्तक मंदिर, आगरा.

२४४- हिन्दी साहित्य की भूमिका -- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई.961

२४५- हिन्दी साहित्य कोश -- सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल, वाराणसी. सं. २०२०

२४६- हिन्दी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव -- डा० सरनामसिंह शर्मा, बेनीमाधव, इलाहाबाद.

२४७- हिन्दी साहित्य में काव्यरूपों का प्रयोग -- डा० शंकरदेव अवतरे, राजपाल एंड संस.

२४८- हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियां -- डा० शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली.

२४९- होरेस की काव्यकला -- डा० एन० रामननायर, जयपुर, १९७२

इतिहास-ग्रंथ

२५०- इतिहास प्रवेश -- जयचन्द्र विद्यालंकार, हिन्दी भवन, इलाहाबाद.
२५१- कांग्रेस का इतिहास -- डा० पट्टाभि सीतारामय्या.
२५२- भारत का इतिहास -- ईश्वरीप्रसाद.
२५३- भारत का राजनीतिक इतिहास -- राजकुमार, हिन्दी पुस्तकालय, वाराणसी, द्वि०सं०.
२५४- भारत : वर्तमान और भावी -- रजनी पामदत्त, पिपुल्स पब्लिशिंग, दिल्ली.
२५५- भारतवर्ष का इतिहास -- श्यामबिहारी पाण्डेय, नंदकिशोर एंड संस.
२५६- हिन्दुस्तान की कहानी -- जवाहरलाल नेहरू, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली.

संस्कृत के ग्रंथ

२५७- काव्यादर्श -- आचार्य दण्डी, प्रेमचन्द्र एवं बागीशकृत टीका.
२५८- काव्यानुशासन -- आचार्य हेमचन्द्र.
२५९- काव्यालंकार -- आचार्य भामह, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना.
२६०- काव्यालंकार -- आचार्य रुद्रट.
२६१- ध्वन्यालोक - टीका -- अभिनवगुप्त.
२६२- साहित्यदर्पण -- आचार्य विश्वनाथ.
२६३- महाभारत -- गंगापुस्तकमाला, लखनऊ.
२६४- मार्कण्डेय पुराणम्
२६५- मेघदूतम्
२६६- श्रीमद्भागवतम्

पत्रिका

धर्मयुग
नागरी प्रचारिणी पत्रिका
माध्यम
संभावना
समीक्षा
सरस्वती
हिन्दुस्तान.

ENGLISH BOOKS

A history of India: Michael Edwardes; First Nel Mentor edition; Dec.: 1967

An introduction to literary criticism: Marlies K. Danziger & W. Stacy Johnson; D.C. Heath & Co. Boston: 1967

An introduction to poetry - R.M. Alden

An introduction to the study of literature: William Henry Hudson; Second edition reset.

Aesthetics: Croce (Trans)

Aristotle: On the art of Poetry: Trans by Ingram Bywater; Oxford at the clarendon press; 1959.

Aristotle, Horace, Longinus: Classical literary criticism: - T.S. Dorsch; Penguin books.

British Paramountcy and Indian Renaissance: Dr. R.C. Majumdar; Bharathiya Vidya Bhavan's.

Encyclopaedia Brittannica

English Odes - Edmond Gosse

English Poetry - Douglas Bush

Hand book of poetics - F.B. Gummere

Linguistic Survey of India: Dr. Suneethikumar Chatterji

Poetics: Aristotle; trans: by: Butcher

Romanticism - M.C. Bowra

The anatomy of poetry - Marjorie Boulton

The deserted village - Goldsmith

The discovery of India - Jawaharlal Nehru; Asia publishing house; 1961

The Hermit: Goldsmith

The making of literature: R.A. Scott James: Taylor Garnett Evans & Co., Ltd., 1968

The Traveller: Goldsmith.